Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, FEB-MAR, 2023, VOL-11/56

मध्यकालीन हरियाणा में आर्थिक सुधार में उद्योगो की भूमिकाः अकबर के काल में

डा0. अनीता कुमारी
एसोसियेट प्रोफैसर

Abstract

किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में उद्योग बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है । प्राचीन काल से ही हरियाणा में विभिन्न उद्योग स्थापित थे, जो मुख्यतः कृषि तथा गैर कृषि उत्पादन पर आधारित थे। प्राचीनकाल से ही इन उद्योगो को कारीगरों द्वारा अपने परिवार की सहायता से चलाया जाता था तथा ये उद्योग जाति प्रथा पर आधारित थे। सल्तनतकालीन इतिहासकारों जैसे 'ईसामी', 'बरनी', 'इब्नबतूता आदि के वर्णन से पता चलता है कि सल्तनत काल में शासको द्वारा उद्योगो को किस प्रकार बढ़ावा दिया गया जो मुख्यतः किसान तथा कारीगर (जिसके पास जमीन नही होती थी) दोनो द्वारा चलाए जाते थे । इतिहासकारों के अनुसार खिलजी और तुगलक सुल्तानों के द्वारा आर्थिक व्यवस्था में सुधार करने के लिए उधोगों का बढावा दिया गया। किसानों के द्वारा अपने खेत में काम करने के पश्चात् बचे समय में इन उद्योगों को चलाया जाता था। परन्तु मुगल भासक अकबर के शासन काल में कृषि तथा गैर कृषि उत्पादन पर आधारित उधोगों को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाता था। कृषि पर आधरित गुड़, चीनी, नील, आदि से सम्बन्धित वस्तुओं के उद्योग। दूसरे प्रकार के वो उद्योग थे जिनमें गैर कृषि उधेगों में जैसे लकड़ी, कपड़ा, चमड़ा, सिक्के का निर्माण, चटाई बनाना, बर्तन बनाना, खिलौने बनाना, धनुष बाण बनाना गुड़' तथा 'शक्कर' निर्माण, इत्र तथा गुलाब जल, मदिरा उद्योग, तम्बाकू मेंहदी का निर्माण आदि आते थे।

कुंजी शब्दः *'आईने–अकबरी', फतुहाते सलातिन,' हिसार–फिरोजा, धुनियां, 'सीमगिल,' महीन, 'जलाली', 'खिश्त'*

'प्रस्तावना

प्राचीनकाल की तरह सल्तनतकाल में भी हरियाणा की अधिकां ा जनता गांव में रहकर ही कृशि उत्पादन के साथ– साथ कृशि और गैर कृशि पर आधारित उद्योगो से भी अपने परिवार का गुजारा चलाती थी। बाबर जब भारत आया तो उसके काल में लोगों द्वारा स्थापित उद्योग मुख्यतः जाति प्रथा पर आधरित थे ।[1] इन उद्योगों को चलाने वाले कारीगर अपने काम करने के तरीके को नहीं बदलना चाहते थे, क्योकि यह उनके पूर्वजों द्वारा स्थापित व्यवसाय थे जिसके कारण इनमें निर्मित उत्पादन भी बहुत कम मात्रा में होता था । धन की कमी के कारण इन उद्योगो में प्रयुक्त होने वाले औजारों की स्थिति भी अच्छी नहीं थी ।[2] ये उद्योग मुख्यतः गांव में ही स्थापित थे, तथा इनमें निर्मित वस्तुओं द्वारा मुख्यतः गांव तथा आसपास के लोगो की जरूरतों को पूरा किया जाता था ।[3] अबुल फजल द्वारा रचित 'आईने–अकबरी' में अकबर के शासन काल के विभिन्न उद्योगो का वर्णन किया गया है ।[4] उसके अनूसार किसानों की स्थिति में

[1] इरफान हबीब और तपनराय चौधरी, *द कैम्ब्रीज इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, जिल्द प्रथम,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली 1993, पृष्ठ 288

[2] नीलम चौधरी, *सोसियो इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ मुगल इण्डिया,* दिल्ली, 1987, पृष्ठ 111–113
[3] के. एन. चिटनिश, *सोसियो इकॉनोमिक, आस्पैक्ट्स ऑफ मिडिवल इण्डिया,* दिल्ली 1990, पृष्ठ 173
[4] के सी, यादव, *हरियाणाः इतिहास एवं संस्कृति, जिल्द द्वितीय,* दिल्ली, 1990, पृष्ठ 87

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सुधार तथा अधिक से अधिक उद्योग स्थापित करने की ओर ध्यान दिया गया । अकबर के द्वारा जमीदारों, मुकद्मों, शिकदारों को आदेश दिया कि, प्रत्येक गांव में रहने वाले व्यवसायों का अध्ययन करें तथा जिनके पास व्यवसाय नहीं है, उनको व्यवासाय प्रदान करें। आधुनिक इतिहासकार इरफान हबीब, मोरलैण्ड, सीरीन मुसवी द्वारा अकबर के शासन काल में स्थापित उद्योगो की जानकारी दी है। अकबर के शासन काल में हरियाणा क्षेत्र में स्थापित उद्योग गांव के साथ विभिन्न शहरो में भी स्थापित थे ।[5] वस्तुओं के निर्माण के लिए यह क्षेत्र आत्मनिर्भर था। ये उद्योग घरेलु स्तर के आलावा केन्द्रीय स्तर पर भी स्थापित थे, इन उद्योगों में उत्पादित वस्तुओं का निर्माण निजी तथा स्थानीय स्तर की आवश्यकताओं के लिए किया जाता था ।[6] परन्तु अकबर के शासन काल के अन्तिम वर्षो में अनेक यूरोपिय यात्रियों के आगमन के पश्चात इन उद्योगो की स्थिति में सुधार होना आरम्भ हुआ ।

दिल्ली, लाहौर, आगरा, मुल्तान तथा सरहिन्द को जाने वाले विभिन्न व्यापारिक मार्ग इस क्षेत्र से गुजर कर जाते थे । अतः व्यापारिक रास्ते, व्यापारी तथा क्षेत्र में होने वाला उत्पादन, चाहे वो कृषि हो या गैर कृषि, बहुत हद तक उद्योगो को प्रभावित करता था और करता भी है ।[7] जिस क्षेत्र मे जिस वस्तु का उत्पादन अधिक होना था वही पर ही ये उद्योग स्थापित हो जाते थे । अनेक व्यापारिक काफिले इस क्षेत्रों से गुजर कर जाते थे ।[8] व्यापारियों की मांग बढने के कारण इस क्षेत्र में स्थापित उद्योगों की स्थिति में सुधार होने लगा । जैसे हिसार क्षेत्र में चना, बाजरा इत्यादि फसलों के उगाए जाने के कारण यहां पर विभिन्न प्रकार के पशु को पाला जाता था । पशुओं का प्रयोग खेती के साथ–साथ व्यापार के लिए भी किया जाता था । दूर–2 से व्यापारी इस क्षेत्र में पशुओं को खरीदने के लिए आते थे ।[9] इन पशुओं द्वारा अच्छी प्रकार का घी तथा दूध भी प्राप्त किया जाता था । जिसको दिल्ली के बाजार तथा शाही रसोई घरों के लिए प्रयोग किया जाता था ।[10]

समकालीन इतिहासकारों के अनुसार अकबर के शासन में दो प्रकार के उद्योग थे – प्रथम, जो कृषि से सम्बन्धित थे तथा जिनका प्रयोग किसान द्वारा बड़ी मात्रा में किया जाता था जैसे – गुड़, चीनी, नील, आदि से सम्बन्धित वस्तुओं के उद्योग। दूसरे प्रकार के वो उद्योग थे जिनमें गैर कृषि पदार्थो, जैसे लकड़ी, कपड़ा, चमड़ा, सिक्के का निर्माण, चटाई बनाना, बर्तन बनाना, खिलौने बनाना, धनुष बाण बनाना आदि ।[11] इनके अलावा मदिरा निर्माण उद्योग भी स्थापित थे, परन्तु अकबर के शासन काल

---

[5] अशीर्वाद लाल श्रीवास्तव, *अकबर द ग्रेट मुगल, जिल्द तृतीय,* आगरा, 1973, पृष्ठ 35
[6] इरफान हबीब एण्ड तपनराय चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 268
[7] के. एन. चिटनिस, *सोसियो इकॉनामिक अस्पैक्टस* दिल्ली, 1990 पृष्ठ 191
[8] ओम प्रकाश, *भारत का आर्थिक इतिहास,* इलाहाबाद, 1997 पृष्ठ 38
[9] निजामुद्दीन अहमद, *तबकाते अकबरी,* जिल्द द्वितीय, अनुवदित, बी. डी. कलकता, दिल्ली 1936, पृष्ठ 123–24
[10] अबुंल फजल, *आइने अकबरी,* जिल्द प्रथम, अनुवादित ब्लॉकमैन, दिल्ली 1978, पृष्ठ 16
[11] के. एन. चिटनिस, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 234

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

में मदिरा पर प्रतिबंध लगवाने की वजह से इस उद्योग पर प्रभाव पड़ा । ये तीन उद्योग मुख्यतः कीमती फसलों पर आधारित थे जो हरियाणा के बहुत कम क्षेत्रों में उगाई जाता थी ।[12] ये जरूरी नहीं होता था कि इनका निर्माण केवल किसान द्वारा ही किया जाता था समाज में किसानों के अलावा अन्य लोग भी विभिन्न उद्योगों को चलाकर अपने जीवन का निर्वाह करते थे ।[13]

अकबर के शासन काल में इस क्षेत्र में मुख्यतः दो प्रकार के उद्योग स्थापित थे – बड़े उद्योग तथा लघु उद्योग । बड़े उद्योग मुख्यतः हिसार–फिरोजा, कुरुक्षेत्र, करनाल, सोनीपत, पानीपत इत्यादि में फैले हुए थे । इन उद्योगों की स्थिति या इनका आधार दिल्ली, आगरा, कश्मीर इत्यादि बड़े क्षेत्रों में स्थापित उद्योगो से काफी कम था ।[14] इस क्षेत्र के बड़े उद्योग शहरों या मुख्य प्रशासनिक केन्द्रो में स्थापित थे परन्तु लघु उद्योग इन प्राशासनिक केन्द्रो के अन्तर्गत आने विभिन्न छोटे–2 गांव में स्थापित थे। सतीस चन्द्र के अनुसार सर्वाधिक महत्वपूर्ण लघु उद्योग कपड़ा, घातु कर्म, भवन निर्माण, बर्तन उद्योग इत्यादि थे ।[15]

समाजिक ढांचे के अनुसार ग्रामीण कारीगर द्वारा वस्तुओं का निर्माण मुख्यतः खुद की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता था । अच्छी वस्तुओं का निर्माण बड़े शहरों में किया जाता था । परन्तु गांव में भी ऐसे कारीगर भी रहते थे जो स्वयं की जरूरतों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के लिए भी उत्पादन करने की कोशिश करते थे ।[16]

'गुड़' तथा 'शक्कर' निर्माण उद्योग :–

'गुड़' तथा 'शक्कर' निर्माण उद्योग मुख्यतः गन्ने पर आधारित था । इनके निर्माण के लिए गन्ने का कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता था । गुड़ का निर्माण करने के लिए के लिए उसी विधि का प्रयोग किया जाता था जो प्राचीन काल से चलती आ रही थी । अकबर के शासन काल में नारनौल, पानीपत, करनाल, रोहतक से अच्छी किस्म का गन्ना उगाया जाता था । जिन क्षेत्रों में इनकी अधिकता होती थी मुख्यतः वहीं पर इन उद्योगो को स्थापित किया जाता था ।[17] बड़े–2 शहरों जैसे दिल्ली, आगरा, में चीनी का प्रयोग किया जाता था । परन्तु गांव के लोगो द्वारा मुख्यतः गुड़ तथा शक्कर का प्रयोग किया जाता था ।[18] इनका निर्माण मुख्यतः घर पर ही कर लिया जाता था जैसे, गन्ने के टुकड़े कर लिए जाते थे, फिर उसे चरखी में दबाया जाता था तथा निकले हुए रस को लोहे की बड़ी–2 कढाईयों में तब तक

---

[12] डी. एन. मलिक, *मिडिवल ट्रेडिट्रीशन आफ ए रिजन,* रोहतक 1982, पृष्ठ 24–26
[13] ओमप्रकाश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 31
[14] इरफान हबीब, *एन एटलस आफ द मुगल एम्पायर,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली 1986 सीट 4 बी पृष्ठ 12–13
[15] सतीश चन्द्र, *मध्यकालीन भारत, सल्तनत से मुगल काल तक*, दिल्ली 2000, पृष्ठ 150
[16] नीलम चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 112
[17] के, सी. यादव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 86–87
[18] मोरलैण्ड, *अकबर की मृत्यु के समय का भारत,* दिल्ली, 1996 (प्रथम संस्करण 1976) पृष्ठ 142

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

गर्म किया जाता था जब तक कि वह रवेदार गुड़ का रूप ना धारण कर लें । फिर उसे उसे गुड़ की भेलियों में परिवर्तित कर दिया जाता था । थोड़ा साफ करके खांड बना ली जाती थी ।[19] मुख्यतः सभी स्थानों में गुड़ का प्रयोग किया जाता था । गुड़ तथा शक्कर का निर्माण घरेलू उपयोग के अतिरिक्त आस पास के क्षेत्रों के लिए भी किया जाता था । मिठाई बनाने, फलों के मुरब्बे तथा शरबत बनाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता था । कोल्हू के द्वारा गुड़–शक्कर को तैयार किया जाता था ।[20]

इत्र तथा गुलाब जल उद्योग :–

इत्र तथा गुलाब जल का प्रयोग सल्तनत काल से ही होता आ रहा है । इनका निर्माण करने के लिए मुख्यतः फूलों पर आधरित रहना पड़ता था । सल्तनत काल में फिरोजशाह तुगलक ने इस उद्योग को बढ़ावा देने दिल्ली के आसपास विभिन्न बागों का निर्माण करवाया । सल्तनत काल की अपेक्षा मुगल काल में इस उद्योग को ज्यादा बढ़ावा मिला ।[21] इत्र एक विलासिता का पदार्थ था जिसे धनी परिवार के लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता था । साधारण लोगों द्वारा इसका प्रयोग बहुत कम किया जाता था । बाद के मुगल शासकों द्वारा पिंजौर तथा नारनौल में इत्र निर्माण उद्योग को बढ़ावा दिया गया । इन क्षेत्रों में निर्मित इत्र दिल्ली तथा आगरा के बाजारों में बेचा जाता था ।[22] परन्तु अच्छी किस्म का 'इत्र' तथा 'गुलाब जल' दिल्ली के बाजारों में बनाया जाता था । इत्र तथा गुलाब जल का उपयोग समारोह, उत्सव में भी किया जाता था । इसके निर्माण द्वारा भी सरकार को आय होती थी क्योकि कोई भी धार्मिक कार्य बिना फूलों की सजावट के बगैर सही नहीं समझा जाता था । इतिहासकार के. एम. अ ारफ के अनुसार रोहतक में भी इत्र का निर्माण किया जाता था ।[23]

मदिरा उद्योग :–

मदिरा उद्योग भी काफी प्रचलन में था । गांवों में भी इसका स्थानीय स्तर पर निर्माण किया जाता था । इस उद्योग से भी सरकार को आय प्राप्त होती थी । इसको बनाने के लिए गुड़, महुआ, जो, रोटी और चावल का प्रयोग किया जाता था । भारतीय खजूर तथा नारीयल द्वारा भी शराब तैयार की जाती थी । मदिरा बाजारों में खुले रूप से मिलती थी ।[24] ये सभी चीजें हरियाणा क्षेत्र में भी उपलब्ध थी जिससे अन्दाजा लगाया जा सकता है इस क्षेत्र में भी मदिरा का उत्पादन किया जाता था । परन्तु अकबर के काल में इस उद्योग पर कानूनन प्रतिबंध का आदेश दिया गया । फिर भी चोरी छिपे लोगो द्वारा मदिरा

---

[19] के. एम. अशरफ, *हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन व परिस्थितियां,* दिल्ली, 1990(प्रथम संस्करण 1969) पृष्ठ 138
[20] ओम प्रकाश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 30–31
[21] के. एम. अशरफ, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 123
[22]वे, सी, यादव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 86–87
[23] के. एम. अशरफ, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 124
[24] वही, पृष्ठ 270

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तैयार की जाती रही । शराब बनाने के लिए उन्ही विधियों का प्रयोग किया जाता अकबर से पूर्व भी प्रचलित थी ।[25]

तम्बाकू तथा मेंहदी उद्योग :–

तम्बाकू का प्रयोग भारत में यूरोपिय यात्रियों के आने के पश्चात शूरू हुआ । जहांगीर के शासन काल में विभिन्न यूरोपिय यात्रियों के विवरण से पता चलता है कि नारनौल में तम्बाकू का उत्पादन किया जाता था दूर के अलावा खेबर दजी से हमें विभिन्न उद्योग चलाने में सहायता मिलती थी । अकबर के अधिकारियों द्वारा इस पौधो की बहुत कम जानकारी दी थी अकबर के शासनकाल में नारनौल में हिना तथा तम्बाकू उगाया जाता था ।[26] कृषि उत्पादन के अलावा अन्य गैर कृषि उत्पादन से सम्बन्धित ओद्यौगिक निर्माण किया जाता था जिनका निम्नलिखित वर्णन किया गया है :–

कपड़ा उद्योग :– कपड़ा उद्योग महत्वपूर्ण उद्योग रहा है सल्तनत काल ही भारत में विभिन्न सूती, रेशमी, मखमली, ऊनी आदि तैयार किए जाते थे । वस्त्र उद्योग के मामले में भारत आत्मनिर्भर था केवल रेशमी वस्त्रों के लिए रेशम ही बहार से मंगवाई जाती थी अन्य वस्तुएं तो इस क्षेत्र में उपलब्ध थी कपड़ा शहर के प्रत्येक क्षेत्र में तैयार किया जाता था ।[27] परन्तु अकबर के शासन काल में हरियाणा क्षेत्र में केवल सूती, ऊनी वस्त्र तैयार किए जाते थे । रेशमी वस्त्र बहुत कम प्रयोग किया जाता था । सूती कपड़ा कपास पर आधारित था । हरियाणा क्षेत्र में कपास बहुत कम उगाई जाती थी परन्तु फिर भी सिरसा, हिसार, फतेहाबाद, फिरोजा, आदि में अच्छी किस्म की कपास उगाई जाती थी । कपास उगाने के लिए काली मिट्टी की जरूरत पड़ती थी जो मुख्यतः जींद, सिरसा, फतेहाबाद आदि क्षेत्रों में पाई जाती थी ।[28] कपडे सादे तथा सुन्दर दोनों प्रकार के होते थे जिनको हैण्ड–लूम पर बनाया जाता । डिजाइन के लिए लकड़ी के ब्लॉक का प्रयोग किया जाता था । इनका निर्माण घरेलू स्तर के अलावा बड़े–2 बाजारों के लिए किया जाता था । किसानों द्वारा सूती कपड़े बनाने के लिए उन्ही विधियों का प्रयोग किया जाता था जो इससे पूर्व भी प्रचलित रही थी ।[29] सुन्दर कपड़ो के अलावा साधारण कपड़े भी तैयार किए जाते थे । कपड़ा उद्योग मुख्यतः गांव के प्रत्येक घर में मिलता था । रेशम मुख्यतः कश्मीर, बंगाल में तैयार की जाती थी पर अच्छी स्तर की रेशम बनावने के लिए भारत को अन्य स्थानो पर निर्भर रहना पड़ता था जैसे चीन, खैबर दर्रा आदि ।[30] वस्त्र का निर्माण करने के लिए किसान अथवा कारीगर को विभिन्न क्रियाएं करनी पड़ती थी और वह यह क्रियाएं अपने परिवार की सहायता से करता था ।

---

[25] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 142
[26] कनिधंम, *आर्कोलॉजीकल सर्वे आफ इंडिया,* जिल्द सप्तम, वाराणसी 1966, पृष्ठ 27
[27] के. एन. चिटनिस, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 243
[28] बदायूनी, *मुन्तखब–उत्–तवारिख, जिल्द तृतीय,* अंग्रेजी अनुवादित टी डब्ल्यू हेग, कलकता 1973, पृष्ठ 361
[29] इरफान हबीब एण्ड तपनराय चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 268
[30] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 155

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सल्तनत काल से ही विभिन्न यन्त्रों का प्रयोग होने लगा था, जो कपास से धागा बनाने में सहायता करते थे जैसे धुनियां, जिसके द्वारा कपास को बीज से अलग किया जाता था तथा बाद में चरखे के द्वारा कपास से सूत बनाया जाता था । आधुनिक इतिहासकार इरफान हबीब के अनुसार कुछ प्रसिद्व कवियों जैसे मुहम्मद मलिक जायसी ने चरखे का वर्णन किया है । उसके अनुसार सर्वप्रथम ईरान में 12 वीं सदी मे चरखे का प्रयोग किया गया परन्तु भारत में इसका उल्लेख 14 वीं सदी के मध्य में हुआ ।[31] इसामी द्वारा रचित 'फतुहाते सलातिन' में चरखा शब्द का प्रयोग किया गया है ।[32] अतः ये कहा जाता है कि सल्तनत काल में प्रचलित चरखे का प्रयोग अकबर के शासन काल में भी किया जाता था ।

सूत कातने का कार्य मुख्यतः स्त्रियों के द्वारा ही किया जाता था ।[33] परन्तु परिवार के अन्य सदस्य भी उसकी सहायता करते थे । सूत कातने का कार्य मुख्यतः एक विशेष जाति द्वारा किया जाता था, जिनको जुलाहा कहा जाता था ।[34] समाज में अन्य वर्गो की तरह यह वर्ग भी कपड़ा बनाकर अपने परिवार का जीवन निर्वाह करता था । सूत तैयार करने के पश्चात इसको बड़ी–2 गांठो में बांधा जाता था । अकबर के शासन काल में नारनौल में सूत को गांठों में बांधने के लिए भेजा जाता था ।[35]

सूती कपड़ों को दो श्रेणियों में बांटा जाता था– मोटा (कमीन) एवं पतला (महीन) । मोटे कपड़े को पट भी कहा जाता था । इस क्षेत्र के लोगो द्वारा मुख्यतः 'महीन' कपड़ा ही तैयार किया जाता था ।

वस्त्र सादे तथा डिजाइनदार दोनो तरह के होते थे । डिजाइन 'लूम' पर दागों द्वारा बनाया जाता था । लकडी के ब्लाक द्वारा कपड़े को छापा जाता था । अकबर के शासन काल में मुल्तान से सिरसा कपड़े छापने के लिए भेजा जाता था ।[36] कपड़े की गुणवत्ता दागे की गुणवत्ता पर निर्भर करती थी । इस क्षेत्र में उत्पादित कपड़ो को दिल्ली तथा आगरा के बजारों में बेचा जाता था । महीन के अलावा बफता नामक साधारण कपड़ा भी तैयार किया जाता था । जिसको गरीब आदमी से लेकर साधारण व्यक्ति तथा अधिकारियों द्वारा पहना जाता था ।[37]

कपड़े के अलावा विभिन्न चटाई, दरियां, चादर तथा कम्बल भी बनाए जाते थे । इन सभी कपड़ो का निर्माण 'हैण्ड–लूम' पर ही किया जाता था । इन सभी वस्तुओं का प्रयोग साधारण तथा शाही दोनो परिवारों में किया जाता था ।[38] इनके अलावा विभिन्न प्रकार के तरपाल तथा तम्बुओं का भी प्रयोग किया

---

[31] वही, पृष्ठ 151–152
[32] हमिदा खातुन नकवी, *एग्रीकल्चर, इंडस्ट्रीयल एण्ड अर्बन हाईनामिज्म अण्डर द, सुल्तानस् ऑफ* दिल्ली, दिल्ली 1986, पृष्ठ 46
[33] इरफान हबीब एण्ड तपनराय चौधरी, पूर्व उद्धृत, प्ष्ठ 268
[34] वही, पृष्ठ 268
[35] जे. पी. यादव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 87
[36] हमिदा खातुन नकवी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 121
[37] इरफान हबीब एण्ड तपन राय चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 268
[38] वही, पृष्ठ 268

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जाता था । अबुल फजल ने अपनी पुस्तक में 11 प्रकार के तम्बुओं का वर्णन किया है ।[39] तम्बुओं तथा तरपाल का प्रयोग सार्वजनिक स्थान के अलावा विभिन्न उत्सवों में किया जाता था । तरपाल का प्रयोग किसान द्वारा अनाज को ढकने के लिए किया जाता था ।

नील उद्योग :– कपड़े विभिन्न रंगो के बनाए जाते थे और इन कपडो को रंगने के लिए नील का प्रयोग किया जाता था । इस क्षेत्र में बहुत कम स्थानो पर नील का उत्पादन किया जाता था । यह एक कीमती फसल थी तथा इसका उत्पादन करने से सरकार को आय होती थी ।[40] हरियाणा के झज्जर, मेवात, थानेसर नामक स्थानों पर नील का उत्पादन किया जाता था ।[41] विलियम फिच के अनुसार नील को तैयार करने के लिए विभिन्न मजदूरों की सहायता लेनी पड़ती थी । इसका निर्माण करते वक्त किसान को बहुत सावधानी बरतनी पड़ती थी ।[42] नील को प्रतिवर्ष वर्षा के बाद बोया जाता था । यह वर्ष में तीन बार काटा जाता था । पहली बार तब काटा जाता था जब यह पौधा 2 या 3 इंच ऊॅचा होता था । पृथ्वी से 6 इंच छोडकर शेष भाग काट लिया जाता था । पहली बार में काटने से जो नील बनता था वह दूसरी बार या तीसरी बार में काटने से अच्छा होता था । पौधा काटने के पश्चात् इसे एक तालाब में डाल दिया जाता था, जिसमें चुने का पानी मिला होता था । तालाब में सुराख बने होते थे उन्हें खोल दिया जाता था तथा बाद मे अगुंलियों से मथ कर अण्डे के आकार का बना लिया जाता था । प्रातः रखने के पश्चात शांयः तक अंडे का रंग नीला निकालता था । नील खरीदते वक्त व्यापारी यह देखते थे कि इसमें रेत तो नही मिली जिसका पता नील को जलाकर किया जाता था ।[43]

हरियाणा के मेवात क्षेत्र में अच्छी प्रकार की नील उगाई जाती थी । यहां पर निर्मित नील को तैयार करके दिल्ली के बाजारों में भेजा जाता था । परन्तु बयाना में तैयार की गई नील से अच्छी नहीं थी । आइने अकबरी के अनुसार बयाना में निर्मित नील का मूल्य 30 रूपये तथा मेवात में निर्मित नील का मूल्य 20 रूपये प्रति पौड था ।[44]

इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र मे भी नील को तैयार किया जाता था । यहां पर निर्मित नील अहमदाबाद क्षेत्र में तैयार किऐ गऐ नील जैसा था । पानीपत में विभिन्न दुकाने थी जहां कपड़ो की रंगाई, बंधाई तथा कपड़ा बनाया जाता था । नील को कपड़ों की रंगाई के अलावा नाटकीय कार्यो, त्वचा के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता था ।[45]

---

[39] अबुलफजल, *अकबरनामा* जिल्द तृतीय, अनुवादित एच बेवरीज, दिल्ली 1973, पृष्ठ 422
[40] डी. एन. मलिक, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 26
[41] इरफान हबीब, एन एटलस आफ मुगल एम्पायरन, सीट 4–बी, पृष्ठ 12
[42] ओमप्रकाश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 24
[43] वही, पृष्ठ 24–25
[44] .के,सी. यादव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 85
[45] वही, पृष्ठ 85

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

हैंड लूम के अलावा महिलाओं द्वारा हाथ से भी कपड़ों को बुना जाता था । अकबर के शासन काल में थानेसर तथा तरावड़ी क्षेत्र में अच्छी किस्म का कपड़ा बुना जाता था तथा यहां पर बुने कपड़ों को आस–पास के बाजारों में भी बेचा जाता था ।[46]

सूती तथा बुने हुए कपड़ों के अलावा मलमल के कपड़ों को भी यहां के लोगो के द्वारा बनाया जाता था । मध्यकाल में अच्छी किस्म का रेशम मुल्तान से सिरसा तथा आस–पास के क्षेत्रों में निर्यात की जाती थी जिससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यहां के आस–पास के क्षेत्रो में रेशम के कपड़े बनाए जाते थे ।[47]

दुध तथा घी उत्पादन उद्योग :– प्राचीन काल से ही भारत में दूध तथा घी का उत्पादन होता रहा है । इसको प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के पशु पाले जाते थे और यह कार्य सल्तनत की तरह मुगल काल में भी होता था । फिरोजशाह तुगलक द्वारा 1354 ई0 में हिसार–फिरोजा नामक शहर का निर्माण करवाया तथा उसके द्वारा यहां पर विभिन्न चारगाहों का निर्माण करवाया जिसमें विभिन्न के पशु पाले जाते थे । उसके शासन काल में हिसार–फिरोजा तथा आस पास के क्षेत्रों में ऐसा कोई गांव नहीं था जहां पर चारगाहों का निर्माण न किया गया हो ।[48] अकबर के शासन काल में भी हरियाणा क्षेत्र तथा आस पास के क्षेत्रों में विभिन्न चारगाहों का निर्माण करवाया गया । हिसार–फिरोजा, सिरसा, फतेहाबाद में उगाया जाने वाला चना, बाजरा, पशुओं के लिए काफी लाभदायक होता था, जिससे यहां पर पशुओं की अच्छी नस्ल पाई जाती थी । यहां पर पाले गए पशुओं से अच्छी प्रकार का घी तथा दूध प्राप्त किया जाता था ।[49] यहां पर उत्पादित घी तथा दूध को दिल्ली के बाजारों में बेचा जाता था तथा शाही–परिवार के लोगो के रसोई घरों की जरूरतों के लिए भी प्रयोग किया जाता था ।[50]

दूध तथा घी द्वारा विभिन्न प्रकार की मिठाईयां बनाई जाती थी जिनका प्रयोग बाजारों में बेचने के लिए किया जाता था । लेकिन इस क्षेत्र की तुलना काबुल, कंधार, आगरा, बंगला जैसे अच्छे उद्योगों में नही की जाती थी ।[51]

नमक उद्योग :– अकबर के शासन काल से पूर्व ही नमक उत्पादन उद्योग महत्वपूर्ण उद्योग था । नमक मुख्यत समुन्द्र तथा पर्वतों से पाया जाता था । अकबर के शासन काल में हरियाणा क्षेत्र में नमक का उत्पादन बहुत कम किया जाता था । अकबर के शासन काल में नारनौल, गुडगांव, रोहतक में नमक तैयार की जाती थी । अबुल फजल के अनुसार अकबर के शासन काल में नमक दो प्रकार की होती थी– सम्भल तथा सुल्तानपुरी नमक । सुल्तान पुरी नमक मुख्यतः फररूखनगर, जारसा तथा झज्जर में तैयार

---

[46] इरफान हबीब, *एन एटलस आफ द, मुगल एम्पायर,* पूर्व उद्धृत, सीट 4 बी, पृष्ठ 12
[47] हमिदा खातुन नकवी, *एग्रीकल्चर,* .(1206–1555), पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 105
[48] इरफान हबीब एण्ड तपनराय चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 48
[49] निजामुदीन अहमद, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 47–48
[50] इरफान हबीब, *एन एटलस आफ मुगल एम्पायर, सीट* 4 बी, पृष्ठ 12–13
[51] डी. एन. मलिक, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 32–33

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

किया जाता था ।[52] उस समय में नमक प्रति व्यक्ति के हिसाब से कम उपयोग किया जाता था । यह मुख्यतः पंजाब की पहाड़ियों से प्राप्त किया जाता था ।

लकड़ी उद्योग :– प्राचीन काल से लकड़ी उद्योग महत्वपूर्ण रहा है । सल्तनतकाल की तरह अकबर के शासन काल में भी इस उद्योग को प्रोत्साहन दिया गया । लकड़ी का प्रयोग घरेलू कार्यो के अलावा बड़े–2 शहरों में भी किया जाता था । लोहे की कमी के कारण लकड़ी का प्रयोग अधिक किया जाता था ।[53] इस उद्योग का सम्बन्ध लघु स्तर से लेकर उच्च स्तर तक था । लकड़ी से विभिन्न प्रकार के औजार बनाए जाते थे जैसे हल, फावड़ा, भूमि समतल करने का फट्टा, कुदाली, इत्यादि । इन यन्त्रों का निर्माण एक विशेष जाति द्वारा किया जाता था जिससे बढ़ई कहा जाता था । इन कृषि यन्त्रों के अलावा विभिन्न प्रकार के खिलौने, तथा भवन निर्माण के लिए भी लकड़ी का प्रयोग किया जाता था ।[54]

गांवों में रहने वाले विभिन्न कारीगरों द्वारा लकड़ी की टोकरियों का भी निर्माण किया जाता था । जिसमें विभिन्न खाद्य तथा अखाद्य पदार्थो को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता था । अनाज को बोरियों में भरने के लिए टोकरी की आवश्यकता पड़ती थी । अकबर ने लकड़ी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए मेवात, रेवाड़ी तथा हिसार–फिरोजा के आस पास के जंगलों को कटवा दिया । इस कार्य में लगे कारीगरों को अकबर द्वारा मजदूरी के अलावा लकड़ी भी दी गई, ताकि वह इसका अपने घरों में प्रयोग कर सकें । ईधन के प्रयोग के लिए भी लकड़ी का प्रयोग किया जाता था । क्योकि तांबा, लोहा आदि धातुएँ कच्चे रूप में मिलती थी इनको धातु का रूप देने के लिए आग में पकाया जाता था । अबुल फजल के अनुसार अकबर के शासन काल में आठ प्रकार की लकड़ी का प्रयोग किया जाता था । बांस, मूंज, सरकड़े की छाल, का प्रयोग भी किया जाता था । इसके अतिरिक्त बांस का प्रयोग सिहांसन बनाने, कलम बनाने तथा सरकड़े की छाल का प्रयोग रस्सी बांटने के लिए किया जाता था ।[55]

चमड़ा उद्योग :– अकबर के शासन काल में यह उद्योग भी अच्छी अवस्था में था । मुख्यतः सभी क्षेत्र में चमड़ा तैयार किया जाता था ।[56] यह उद्योग आत्मनिर्भर था, क्योकि चमड़ा पशुओं की खाल से प्राप्त होता था और गांव में लगभग हर घर में पशु पाले जाते थे । चमड़े का प्रयोग मुख्यतः जूते, मशक, जीन तथा साज सज्जा के लिए किया जाता था । चमड़े से सम्बन्धित सभी वस्तुओं का निर्माण चर्मकार द्वारा किया जाता था । मशक का प्रयोग सिचांई के साधनों के लिए, जीनका शाही अस्तबल के लिए किया जाता था । जीन मुख्यतः रस्सी तथा चमंड का बना होता था ।[57]

---

[52] के. सी, यादव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 85–87
[53] डी एन मलिक, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 32
[54] अबुल फजल, जिल्द प्रथम, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 164–165
[55] अबुल फजल, *आईने अकबरी,* जिल्द प्रथम एंव द्वितीय, हिन्दी अनुवादित हरिवेश शर्मा, दिल्ली 1966, पृष्ठ 163–165
[56] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 147
[57] वही, पृष्ठ 147

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

चमड़े की वस्तुओं का उत्पादन घरेलू उपभोग के अलावा शहरों के लिए किया जाता था । लोगो की जरूरतों को इस उद्योग में निर्मित उत्पादन द्वारा ही पूरा कर लिया जाता था । अच्छी किस्म का चमड़ा उद्योग दिल्ली में स्थापित था परन्तु इसके लिए कच्चा माल हरियाणा तथा आस पास के क्षेत्रों से भेजा जाता था, जो मुख्यतः गांवों से ही प्राप्त किया जाता था ।[58] कुओं से पानी भरने के लिए चमड़े की बाल्टी का प्रयोग किया जाता था जिसका प्रचलन अकबर के शासन काल में भी था ।

धातु उद्योग :– यह उद्योग अकबर के शासन काल के पूर्व से ही प्रचलित था । अकबर के शासन काल में इसकी ओर ज्यादा ध्यान दिया गया । इस उद्योग के अन्तर्गत लोहा, तांबा, जस्ता, कांसा, सोना, चांदी, पीतल इत्यादि धातुएं आती थी ।[59] परन्तु भारत के उतरी भाग में जस्ता, कांसा इत्यादि धातुएं बहुत कम पाई जाती थी । यह उद्योग सिमित क्षेत्र में फैला हुआ था । हरियाणा क्षेत्र में लोहा, सोना, तांबा तथा चांदी धातुऐं पाई जाती थी ।[60] परन्तु ये बहुत ही सीमित क्षेत्र में मिलती थी । इस क्षेत्र में लोहा अधिक पाया जाता था । सोनीपत में लोहे से सम्बन्धित उद्योग स्थापित था ।[61] यहां पर विभिन्न कृषि यन्त्रों जैसे खुरपा, कस्सी, के अलावा तलवार, ताला–कुंजी, उस्तरा, बर्छी, भाले, इत्यादि अस्त्र–शस्त्र तथा दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाली वस्तुओं का निर्माण किया जाता था ।[62] इस क्षेत्र में यह उद्योग इतनी उन्नत स्तर पर स्थापित नहीं था, परन्तु फिर भी यहां से निर्मित वस्तुओं को दिल्ली तथा आगरा के बाजारों में बेचा जाता था ।

नारनौल, हिसार–फिरोजा में तांबे की खाने होने के कारण यहां पर विभिन्न उद्योग स्थापित थे । जहां तांबे के सिक्के तथा बर्तन बनाए जाते थे जिनके द्वारा घरेलु आवश्कताओं के अलावा विभिन्न कस्बों की जरूरतों को भी पूरा किया जाता था । अबुल फजल के अनुसार नारनौल में पितल के सिक्को को तैयार किया जाता था ।[63] *जलाली* सिक्का चांदी का बना होता जो गोल तथा चकोर होता था । अकबर द्वारा मुजफ्फर खां की सहायता से नारनौल में टक्साल का निर्माण करवाया गया । जिसमें विभिन्न कारीगरों को व्यवसाय मिलता था । तांबा कच्चा पाया जाता था । बाद में इसको ईंधन में पकाकर सिक्के तैयार किये जाते थे । तांबे के अतिरिक्त हरियाणा क्षेत्र के विभिन्न भागों जैसे पानीपत, थानेसर, रोहतक, झज्जर तथा मेवात में स्टील की धातु पाई जाती थी ।[64] जिसके कारण इन स्थानों पर विभिन्न स्टील

---

[58] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 142, 170
[59] के. एन. चिटनिस, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 190
[60] इरफान हबीब, एन. एटलस,....., पूर्व उद्धृत, सीट 4 बी., पृष्ठ 12–13
[61] ए. एल. श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 23
[62] हमिदा खातुन नकवी, *अर्बनाइजेशन.....* (1555–1803), पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 130
[63] इरफान हबीब, *एन एटलस आफ मुगल एम्पायर*, पूर्व उद्धृत, सीट 4 बी. पृष्ठ 12–13
[64] अबुल फजल, *आइने अकबरी*, जिल्द प्रथम, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 27

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उद्योग स्थापित थे । इस धातु के द्वारा विभिन्न बर्तन बनाए जाते थे जैसे बाल्टी, मग, थाली, कटोरा, प्लेट इत्यादि ।[65]

तांबे, सोने, चांदी, की धातु पाने के कारण यहां पर विभिन्न लुहार, सुनार, रहते थे जिनके द्वारा धातुओ का प्रयोग करके विभिन्न आभूषण तैयार किए जाते थे ।[66] परन्तु सोने तथा चांदी उद्योग से उत्पादित सिक्के, बर्तन, का प्रयोग शाही परिवार के लोगो द्वारा किया जाता था ।[67] साधारण परिवार के लोगो द्वारा मुख्यतः तांबे की धातु पा इससे निर्मित पदार्थो का प्रयोग किया जाता था क्योकि यह सोने तथा चांदी के मुकाबले सस्ती होती थी ।[68]

एक गांव में कम से कम दो सुनार रहते थे जिनके द्वारा सोने तथा चांदी से निर्मित वस्तुओं को बनाया जाता था । तांबे का बना सिक्का चांदी के सिक्के से ज्यादा प्रचलित था । अकबर के शासनकाल में कुल मिलाकर 44 तांबे की तथा चांदी तथा सोने की 14 टक्साल स्थापित थी ।[69] दारोगा, 'सर्राफ' टक्साल के प्रमुख अधिकारी होते थे । जिनकी सहायता से सिक्के निर्माण का कार्य तथा टक्साल की देखभाल की जाती थी ।[70]

मिट्टी उद्योग :–

मिट्टी का प्रयोग विभिन्न बर्तन बनाने के लिए, भवन निर्माण तथा खिलौने बनाने के लिए किया जाता था । मिट्टी से *खिश्त* (ईंट) बनाई जाती थी जिसका प्रयोग विभिन्न भवन बनाने के लिए किया जाता था । 'खपरेल' मिट्टी से बनाया जाता था जिसका प्रयोग घर छापने के लिए किया जाता था । यह एक हाथ लम्बा और दस अंगुल चोड़ा होता था जिससे आग में पकाया जाता था । सीमगिल एक चिकनी मिट्टी होती थी, जिसका मूल्य एक दाम प्रति मन होता था । मकान को इससे पोतते थे तथा इससे मकान को ठण्डा और सुन्दर बनाया जाता था । ईंट बनाने वाले को खिशत तराश कहा जाता था ।[71]

इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन तथा खिलौने बनाए जाते थे जिनका निर्माण एक विशेष जाति कुम्हार द्वारा किया जाता था । इन बर्तनों, जैसे मटके, सुराही, आदि, का प्रयोग पानी पीने के अलावा विभिन्न खाद्य तथा अखाद्य पदार्थो के लिये किया जाता था ।[72] झज्जर, महेन्द्रगढ़, रोहतक इत्यादि स्थानों पर बर्तन तथा खिलौने बनाने का कार्य किया जाता था ।[73]

---

[65] के. सी. यादव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 417
[66] इरफान हबीब, तपन राय चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 277
[67] नीलम चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 122
[68] ओम प्रकाश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 31
[69] के. एन. चिटनिश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 252–53
[70] अबुल फजल, आईने अकबरी, जिल्द प्रथम ओर द्वितीय, अनुवादित हरिवंश राय शर्मा, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 163–165
[71] वही, पृष्ठ 164–165
[72] ओम प्रकाश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 31
[73] के. सी. यादव, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 433

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

इन उद्योगो के अलावा अन्य उद्योग भी चलाए जाते थे जैसे आटा पीसना, तेल निकालना, आदि । आटा पीसने का कार्य चक्की द्वारा तथा तेल निकालने का कार्य कोल्हू तथा बैल द्वारा किया जाता था ।[74] तेल निकालने के लिये विभिन्न मजदूरों कि आवश्यकता पड़ती थी । ये उद्योग गांव के साथ–साथ विभिन्न शहरो में भी स्थापित थे । आटा तथा तेल दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुएं मानी जाती थी । तेल सरसों, तिल, गोला आदि का निकाला जाता था ।[75] हरियाणा क्षेत्र में यह उद्योग बहुत सीमित मात्रा में स्थापित था क्योंकि तेल बीज एक कीमती फसल थी जिसको बहुत कम क्षेत्र में उगाया जाता था ।

शाही कारखाने :– उर्पयुक्त सभी उद्योग हरियाणा क्षेत्र में स्थापित थे परन्तु कुछ ऐसे उद्योग भी स्थापित थे जिन पर कारीगरो की बजाय सरकार का अधिकार होता था इनको उद्योग की बजाय 'शाही–कारखाने' कहा जाता था ।[76] इन कारखानो में निर्मित वस्तुओं का प्रयोग बाजारो की बजाय शाही उपभोग के लिए ज्यादा किया जाता था इन कारखानों में विभिन्न कारीगरो द्वारा कार्य किया जाता था । ये कारीगर मजदूरी के हिसाब से कार्य करते थे । जिनमें से कुछ कारीगर ऐसे होते थे जिनके पास खुद के हथियार या साधन होते थे परन्तु कुछ ऐसे कारीगर भी होते थे जिनके पास खुद के साधन नहीं होते थे । इन कारखानों में मुख्यतः सभी वस्तुओ का निर्माण किया जाता था । ये कारखाने मुख्यतः शहरों में स्थापित थे परन्तु इन कारखानों में गांवो में रहने वाले विभिन्न कुशल कारीगरो द्वारा भी कार्य किया जाता था ।[77]

भवन निर्माण उद्योग :– इमारत को बनाने के लिए मुख्यतः मिट्टी, ईट, चूने पत्थर तथा लकड़ी की जरूरत पड़ती थी । इसके द्वारा विभिन्न प्रकार के भवनों, पुलों तथा सराय का निर्माण किया जाता था । यह उद्योग अकबर के शासन काल में अधिक विकसित हो गया था । इसके अलावा इस उद्योग में चूने का निर्माण भी किया जाता था ।[78] इसके अन्तर्गत हरियाणा में विभिन्न भवन, सरायों तथा पुलों का निर्माण करवाया गया । थानेसर, करनाल, पानीपत, हिसार–फिरोजा, हांसी में विभिन्न किलो, मस्जिदों, भवनों का निर्माण हुआ । गिल्कार, संगतराश, पत्थर तोड़ने वाला, बढई इत्यादि कारीगरों के द्वारा इनका निर्माण किया जाता था ।[79] अकबर द्वारा विभिन्न नहरों पर पुलों का निर्माण करवाया गया जिनका प्रयोग प्रशासनिक तथा व्यापारिक दृष्टि से किया जाता था । उसके द्वारा करनाल, पानीपत में पश्चिम यमुना नहर, जो करनाल से हिसार तथा मुख्य क्षेत्रों से गुजरती थी, मुगल पुल का निर्माण करवाया गया ।[80]

निष्कर्ष

[74] ओम प्रकाश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 31
[75] वही, पृष्ठ 31
[76] आइने अकबरी, जिल्द प्रथम, पृष्ठ 142–143
[77] नीलम चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 123
[78] के. एन. चिटनिस, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 188–189
[79] अबुल फजल, आइने अकबरी, हिन्दी अनुवादित, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 268
[80] पंजाब पास्ट एण्ड परजैन्ट, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 473

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उपरोक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है भारत के अन्य स्थानों की तरह हरियाणा क्षेत्र में भी वस्तुओं के उत्पादन करने में लगभग आत्म निर्भर था । गांव के आवश्यकताओं की जरूरतें मुख्यतः इन्ही उद्योगो से पूरी कर ली जाती थी । अन्य मुख्य शहरों की तरह इस क्षेत्र के उद्योगों में निर्मित वस्तुओं को बाहर के क्षेत्रों में भी भेजा जाता था । इन उद्योगों की स्थापना के साथ–साथ अकबर द्वारा सड़को के निर्माण की और ध्यान दिया गया जो सड़के सल्तनत काल में स्थापित उनकों पूर्न निर्मित करवाया ताकि इन सड़को के द्वारा व्यापारियों द्वारा इस क्षेत्र से भी गुजारा जा सकें ।

इन सड़कों को विभिन्न शहरी केन्द्रो से जोड़ दिया गया जैसे दिल्ली से लाहौर जाने वाला मार्ग सोनीपत, पानीपत, असंध, कैथल, फतेहाबाद, सिरसा से होता हुआ लाहौर जाता था । इन केन्द्रो की स्थापना के पश्चात व्यापारी इन मार्गो से गुजरते थे और यहां के उद्योगो में निर्मित माल को अन्य शहरों कस्बों, तथा मुख्य शहरी केन्द्रों में जैसे आगरा, मुल्तान तथा दिल्ली में बेचते थे । अतः बिना उद्योगो की स्थापना में हम व्यापार और वाणिज्य की गणना नहीं करते सकते ।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language